1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्। अथर्ववेद 5/3/4
हे प्रभो/ मैं पापी न बनूं।
O God! I should never become a sinner.

वर्ष 38, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 सितम्बर, 2015 से रविवार 04 अक्टूबर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली में प्रदूषण और डेंगू जैसी भयानक बीमारी को खत्म करने के लिए जगह-जगह यज्ञ एवं हवन
महाशय जी के मन की आवाज का दिल्ली वासियों ने किया स्वागत
रोग मुक्ति यज्ञ को लेकर दिल्ली वासियों में अथाह उत्साह

दिल्ली में लगातार बढ़ रहे प्रदूषण एवं डेंगू आदि प्रकोप को वैदिक विधि द्वारा रोकने के लिए महाशय धर्मपाल जी ने दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र में सर्व रोग निवारण यज्ञ करने का संकल्प व्यक्त किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय जी के इस संकल्प से प्रेरित होकर समस्त आर्य संस्थानों एवं आर्य समाजों को प्रत्येक स्तर पर यज्ञ आयोजित करने का आह्वान किया। इस योजना का शुभारंभ एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में प्रात: हुए यज्ञ के माध्यम से किया गया था। दिल्ली में महाशय जी द्वारा चलाए जा रहे रोग निवारण यज्ञ कार्यक्रम को लेकर अपार उत्साह देखने को मिल रहा है। दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों द्वारा अनेक स्थानों पर एक से अनेक यज्ञ-हवन-प्रवचन इत्यादि के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। लोगों के उत्साह को देखते हुए महाशय जी ने इस कार्यक्रम को एक सप्ताह के लिए

यज्ञ के प्रति जनता का उत्साह देखते हुए महाशय जी ने रोग मुक्ति यज्ञ कराने हेतु सामग्री एवं घृत प्राप्त करने की तिथि 6 अक्टूबर 2015 तक बढ़ाई

दिल्ली के आर्य समाजों से अपील

दिल्ली को रोग मुक्त करने के लिए जिन आर्य समाजों ने अभी तक यज्ञ नहीं कराए हैं वे अपने क्षेत्रों में रोग मुक्ति यज्ञ अवश्य कराएं।

- *एम.डी.एच. से सामग्री प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थानों/पार्कों में यज्ञ करें।*
- *हवन सामग्री व घी प्राप्त करने के लिए सभा कार्यालय में श्री संदीप आर्य जी, मो. 9650183339 पर संपर्क करें।*

शादीखामपुर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

त्रिनगर महर्षि दयानन्द पार्क व वर्धमान वाटिका त्रिनगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

...शेष पेज 4 पर

बदलते जमाने के बदलते भगवान

ऐसे क्या कारण हैं कि पिछले 50 साल में पूजा के लिये दर्जनों भगवानों का जन्म हुआ और फिर वे बदलते जमाने के साथ अपना अस्तित्व खोते चले गये। यदि आज कुछ प्रश्न करूं तो उसे धर्म पर हमला न समझकर, अधर्म पर हमला समझना, कारण धर्म अजेय है और अधर्म पराजित होता है। पहले यह समझें कि भगवान को जिन्दा कौन रखता है क्योंकि अगर हम जिन्दा रखने वाले को पहचान लें, तो मारने वाले को भी पहचान जायेंगे। वैसे तो पूजा-पाठ करने वाले लोगों को भगवानों की कोई कमी नहीं है, मन्दिर भले ही एक हो पर उसमें भगवान दस होते हैं जो समय-समय पर जन्मते और मरते रहते हैं।

70 के दशक में हनुमान और संतोषी माता का जोर था तो 80 के दशक में शेरावाली माता का। 90 के दशक में माता के जागरण चल पड़े फिर अचानक गणेश जी दूध पीने लग गये और भारत ही नहीं पूरे विश्व के पूजारियों ने इस कृत्य की पुष्टि भी की थी; हांलाकि मुझे इस विषय से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सिर्फ बदलते भगवानों के दौर की बात कर रहा हूँ फिर वैष्णों माता लोगों की मन्नत पूरी करने लगी, तभी दक्षिण भारत में विराजमान तिरुपति बालाजी उत्तर भारत में अपनी धाक जमाने ही वाले थे जब तक लोग इस बात को भली-भांति समझ पाते तब तक नये भगवान शिरडी के सांई बाबा आ धमके और धर्म के धंधे के व्यवसाय को आगे बढ़ाते हुए करोड़ों-अरबों

...शेष पेज 7 पर

धर्म के नाम पर नमामि गंगे अभियान की दुर्दशा
विशेष संपादकीय-पढ़े पेज 2 पर

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव

दिनांक 25 अक्टूबर 2015

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् (लघु गुरुकुल) दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को अपना द्वितीय वार्षिकोत्सव का आयोजन आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक जनकपुरी नई दिल्ली में कर रहा है।

समारोह के मुख्यातिथि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के कुलपति जी होंगे।

कार्यक्रम विवरण पृष्ठ 8 पर देखें।

एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यशाला

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की प्रेरणा से आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली के सौजन्य से दिनांक 10 से 18 अक्टूबर 2015 को आर्य समाज कीर्ति नगर में 1 एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण व अभ्यास कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के ब्रह्मा एम.आर. राजेश जी (कालीकट केरल) व सहयोगी आचार्य विवेक जी, आचार्य अरुण जी, आचार्य साजिथ जी, डॉ. ऋषिपाल शास्त्री जी होंगे। कार्यक्रम संयोजक श्री सतीश चड्ढ़ा जी हैं। भाग लेने वाले अभ्यार्थियों को एक समान गणवेश धारण करके स्वयं के यज्ञकुंड पर अभ्यास करना होगा। कुल 50 सदस्य ही मान्य हैं। पंजीकरण एवं प्रशिक्षण शुल्क 1000 रुपये है।

अन्य जानकारी के लिए सतीश चड्ढ़ा जी से संपर्क करें। मोबाईल नम्बर- 09540041414

स्वाध्याय

प्रभु के बुद्धियोग से जीवन-यज्ञ में सफलता

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।।

-ऋ. 1/18/7

ऋषि:- **काण्वो मेधातिथिः।।** देवता- **सदसस्पतिः।।** छन्द:- **गायत्री।।**

शब्दार्थ - यस्मात् ऋते=जिस प्रकाशक प्रभु के बिना विपश्चित: चन= बड़े-बड़े बुद्धिमान्, विद्वानों का भी यज्ञ:= यज्ञ न सिध्यति=सिद्ध नहीं होता स:= वह प्रभु धीनां योगं इन्वति= बुद्धियों के योग में व्याप्त हो जाता है।

विनय - हममें से बहुत-से लोगों को अपनी विद्वता का-अपनी बुद्धि का-बहुत अधिक अभिमान होता है। वे समझते हैं कि वे अपनी विद्वत्ता व चतुराई के बल पर प्रत्येक कार्य में सिद्धि पा लेंगे। उन्हें अपने बुद्धि-बल के सामने कुछ भी दु:साध्य नहीं दीखता, परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं कि बहुत बार उन्हें जिन कार्यों में सफलता मिलती है, वह इसलिए मिलती है कि अचानक उस विषय में उनकी समझ (बुद्धि) प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल होती है। वास्तव में तो इस जगत् का एक-एक छोटा-बड़ा कार्य उस प्रभु के योगबल (बुद्धियोग) द्वारा ही सिद्ध हो रहा है। हम मनुष्यों की बुद्धि जब प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल (जान-बूझकर अनुकूल होती है या अचानक) होती है तब हमें दीखता है कि हमारी बुद्धि से किया कार्य सफल हो गया, परन्तु अचानक हुई अनुकूलता के कारण हमें अपनी सफलता का जो अभिमान हो जाता है, वह सर्वथा मिथ्या होता है। वह हमें केवल धोखे में रखने का कारण बनता है और कुछ नहीं, परन्तु जो जानबूझकर प्रप्त की गई अनुकूलता होती है वही सच्ची है। यदि मनुष्य अपने कार्यों की सिद्धि चाहता है- अपने कार्यों को सफल-यज्ञ बनाना चाहता है, तो उसे यत्नपूर्वक अपनी बुद्धि को प्रभु से मिलाना चाहिए, अपनी बुद्धि का प्रभु में योग करना चाहिए। हमारी बुद्धि प्रभु से युक्त हो गई है-उसकी बुद्धि से बुड़ गई है या नहीं यह पूरी तरह से विर्णीत कर लेना तो हम अल्पज्ञ पुरुषों के लिए सदा सम्भव नहीं होता, हमारे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि हम युक्त करने का यत्न करते जाएं। प्रभु सत्यमय हैं, अत: हमारी बुद्धि सदा सत्य और न्याय के अनुकूल ही रहे (हमारे ज्ञान में जो कुछ सत्य और न्याय है, बुद्धि उसके विपरीत कोई भी निर्णय न करे) यह यत्न करना ही पर्याप्त है। हमारी बुद्धि के प्रभु से योग करने का यत्न जब परिपूर्ण हो जाता है, अर्थात् इस योग में प्रभु व्याप्त हो जाते हैं, तभी वह कार्य सिद्ध हो जाता है, अत: हमें अपनी बुद्धियों का अभिमान छोड़कर, हमारे यज्ञ-कार्य में जो बड़े प्रसिद्ध विद्वान् लोग हैं उनके बुद्धिबल पर भरोसा करना छोड़कर, नम्र होकर अपनी बुद्धियों को सत्य और न्याय-तत्पर बनकर प्रभु से जोड़ने का यत्न करना चाहिए। हम चाहे कितने बुद्धिमान् हों, परन्तु हमें सदा अपनी बुद्धि प्रभु से जोड़कर रखनी चाहिए। प्रभु के अधिष्ठाता के बिना कोई भी यज्ञ-कार्य सफल नहीं हो सकता।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। मो. 09540040339

सम्पादकीय

धर्म के नाम पर नमामि गंगे अभियान की दुर्दशा

जिन नदियों के आंगन में हजारों वर्ष मानव सभ्यता फली-फूली आज वो नदियां अपना अस्तित्व बचाने को रो रही हैं। वो नदिया जिन्हें हम मां कहकर पूजा करते थे, उनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों ? सरकार और जनता एक तरफ तो नदियों की स्वच्छता की बात कर रही है पर प्रदूषित करने में न सरकार पीछे है न जनता। जहां एक तरफ दुनिया भर के गंदे नाले नदियों में गिराये जाते हैं वहीं जनता भी भक्ति और आस्था के नाम पर नदियों को प्रदूषित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती। क्या यह पूजा है? पूजा का पहला अर्थ है स्वच्छता। हर वर्ष गणेश विसर्जन पर नदियों के तटों पर गणेश जी की प्रतिमा विर्सजित की जाती हैं जिस कारण प्रतिमाओं से प्रदूषण तो फैलता ही है साथ ही उस पर लगे रासायनिक रंगों से हजारों मछलियां एवं जलीय जीव-जन्तु मारे जाते हैं। पहले करोड़ों रुपये की मूर्ति विसर्जन कर खर्चा किया जाता है उसके बाद नदियों की सफाई में सरकार के करोड़ों रुपये खर्च होते हैं और कई बार तो कार्यवाही सिर्फ कागजों तक सिमटकर रह जाती है, कश्मीर से कन्या कुमारी, असम से गुजरात तक प्रदूषण के बोझ तले दबी नदियां रो रही हैं, इनका रुदन कोई नहीं सुन रहा है, सुन रहे हैं तो भक्ति के नाम पर फूहड़ गीत।

पिछले कुछ वर्षो में जहां बहुत सारी नदियों ने अपना नाम, अपनी पहचान, अपना अस्तित्व खोया तो वहीं बहुत सी नदियां गंदे नालों के रूप में बदल गयीं। आखिर नदियां कब तक गंदा पानी पीती रहेंगी? कब तक इन बहती अमृतधारा के जल में ये गरल रूपी गंदे नाले मिलते रहेंगे? सदियों से मानव के खेत सींचती और कंठ को तर करती आ रही हैं पर हमने इन नदियों को क्या दिया? हरिद्वार में अस्थियां विसर्जित कीं या फिर पूजा के नाम पर उसमें पत्ते, माला, पॉलिथिन बैग बहाए। जिस कारण आज कुछ नदियां या तो सूख गयीं या फिर आज वो दो बूंद साफ मीठे जल को तरस रही हैं। और तो और दिन पर दिन बढ़ता अवैध खनन, नदियों की अविरल बहती धारा को रोकते पुल और बाँधों का निर्माण ढ़हते किनारे आज इस बात के गवाह हैं कि देश की 225 नदियां प्रदूषण के कारण बीमार हैं। हम विकास की ओर भाग रहे हैं पर कहीं इस विकास की अंधी दौड़ में अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर रहे हैं। हर किसी को कहते सुना होगा कि जल ही जीवन है, किन्तु ये जब, ये जल से भरी जीवन की धारा ही नहीं होगी, जल के बगैर जीवन कैसा होगा? इस प्रकार की आस्था से नदियों की तो दुर्गति हो ही रही है पर इसमें प्रवाहित होने वाले भगवानों की पूजा हो रही है या कुछ और ये आप खुद सोच लें। *-सम्पादक*

ग्रन्थ परिचय

अद्वैतमत खण्डन

प्रश्न 1: क्या महर्षि दयानन्द ने 'अद्वैत मत' अथवा 'नवीन वेदान्त' के विरोध में कोई ग्रन्थ लिखा था?

उत्तर : हां, 'अद्वैतमत-खण्डन' नामक छोटी सी पुस्तक लिखी थी।

प्रश्न 2: यह पुस्तक किस भाषा में लिखी गई थी?

उत्तर : यह संस्कृत भाषा में हिन्दी भाषा के अनुवाद सहित लिखी गई थी।

प्रश्न 3: इसका प्रकाशन और मुद्रण सवामी जी ने कब और कहां से करवाया था।

उत्तर : 'अद्वैतमत-खण्डन' नामक इस पुस्तक का प्रकाशन वि. सम्बत् 1927 में जब स्वामी जी तीसरी बार काशी पधारे थे तब हुआ था। यह ट्रैक्ट 'कविवचन सुधा' नामक हिन्दी के मासिक पत्र में भी छपवाया गया था, जो 'लाइट प्रेस बनारस' में गोपीनाथ पाठक के प्रबन्ध से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 4: क्या यह पुस्तक प्रभावशाली थी?

उत्तर : हां, यह पुस्तक बहुत प्रभावशाली रही। जैसाकि श्री पं. लेखराम जी द्वारा संगृहीत 'महर्षि के जीवनचरित' के पृष्ठ 816 पर लिखा गया है- 'यह ट्रैट नीवन वेदान्त के दुर्ग को तोड़ने के लिए सैनिक बल से अधिक बलवान् है। यह दूसरी बार प्रकाशित नहीं हुआ।' इसी प्रकार 'श्री पं. देवेन्द्रनाथ' द्वारा लिखित जीवन-चरित भाग-1, पृष्ठ 51, में उल्लेख मिलता है, 'इस बार दयानन्द ने इसी दुर्ग नवीन वेदान्त पर गोला बरसाया और उसके खण्डन में 'अद्वैतमतखण्डन' नामक पुस्तक लिखकर प्रकाशित की।'

प्रश्न 5: क्या यह पुस्तक अभी उपलब्ध है?

उत्तर : नहीं, अभी यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 6: वैसे तो महर्षि पहले स्वयं भी अद्वैतवादी थे?

उत्तर : हां, अपने जीवन के बहुत लम्ब समय तक महर्षि अद्वैतवादी रहे अर्थात् जीव और ब्रह्म की एकता मानते रहे। परन्तु बाद में अनुभव के आधार पर वे जीव और ब्रह्म का वास्तविक भेद मानने लग गये थे। उनके जीवन चरित्र में उल्लिखित घटनाओं से विदित होता है कि संवत् 1924 पूर्वार्द्ध से पूर्व ही महर्षि अद्वैतवादी विषयक विचार बदल चुके थे।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

भगवान और ईश्वर शब्द की परिभाषा

...महाभारत युद्ध के बाद वैदिक विद्वान, आचार्यों की क्षति होने के कारण अज्ञान व अन्धविश्वासों का जाल फैलने लगा। जनसाधारण वैदिक धर्म व सिद्धान्तों को भूलने लगे और अवसर वादी लोगों ने अपने-अपने मतों की दुकानें खोल दीं। जनसाधारण में उच्च संस्कारों व राष्ट्र भक्ति की कमी आने लगी और ईश्वर के नाम से धार्मिक अन्धविश्वास, रूढ़ी सामाजिक परम्परायें बुरी तरह से फैलने लगीं। चारों ओर अराजकता व अमानुष्य के संस्कार फैलने लगे। मंदिरों में महापुरुषों की मूर्तियां लगाकर महापुरुष भगवानों को ईश्वर मानकर पूजने लगे। बस यहीं से संसार में तथाकथित भगवानों की बाढ़ आने लगी, और जनसाधारण सत्य ईश्वर से विमुख होने लगे।......

प्रा चीन इतिहास का अवलोकन से ज्ञात होता है कि महाभारत काल तक भारत वर्ष में एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना व स्तुति होती थी और यज्ञ प्रधान काल था। महाभारत युद्ध के बाद वैदिक विद्वान, आचार्यो की क्षति होने के कारण अज्ञान व अन्धविश्वासों का जाल फैलने लगा। जनसाधारण वैदिक धर्म व सिद्धान्तों को भूलने लगे और अवसरवादी लोगों ने अपने-अपने मतों की दुकानें खोल दीं। जनसाधारण में उच्च संस्कारों व राष्ट्र भक्ति की कमी आने लगी और ईश्वर के नाम से धार्मिक अन्धविश्वास, रूढ़ी सामाजिक परम्परायें बुरी तरह से फैलने लगीं। चारों ओर अराजकता व अमानुष्य के संस्कार फैलने लगे। मंदिरों में महापुरुषों की मूर्तियां लगाकर महापुरुष भगवानों को ईश्वर मानकर पूजने लगे। बस यहीं से संसार में तथाकथित भगवानों की बाढ़ आने लगी और जनसाधारण सत्य ईश्वर से विमुख होने लगे। फलस्वरूप आज सारा संसार अराजकता, उग्रवाद, अनाचार, द्वेष के बारूद के ढेर पर बैठा है।

भगवान की परिभाषा: ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशस श्रय:।

ज्ञानेवेराग्योश्चैव षण्णां भग इतीरणा:।।

1. अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म यश, श्री ज्ञान, वैराग्य इन छः का नाम भग है भगवान का पहला गुण सम्पूर्ण ऐश्वर्य : जिसके पास जितने अधिक भग हैं, वह भगवान कहलाता है, किन्तु जिसके पास ऐश्वर्यो का अभाव होता है वही सम्पूर्ण ऐश्वर्यो को पुरुषार्थ से प्राप्त करता है, जैसे श्रीराम व श्रीकृष्ण के पास सम्पूर्ण ऐश्वर्य थे। किन्तु जो संसार में जन्म-मृत्यु को प्राप्त होता है उसी को उक्त भग प्राप्त करने पड़ते हैं। इसलिए उनको भगवान कहते हैं। वह ईश्वर नहीं हो सकते हैं।

ईश्वर : ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव और स्वरूप सत्य हैं जो केवल चैतन्य वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, आदि सत्य गुण वाला है जिसका स्वभाव, अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मा आदि हैं। जिसका कार्य जगत की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना है, सब जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाता है जो सदैव ऐश्वर्ययुक्त है और जगत के प्राणियों को ऐश्वर्य देने वाला है और स्वयं ऐश्वर्य ग्रहण नहीं करता, अपितु कराता है उसे ईश्वर कहते हैं। जन्म नहीं लेता अपितु जन्म देता है।

नोट : ईश्वर की यह व्याख्या सम्पूर्ण लेख के कलेवर में समझने की प्रार्थना है।

2. भगवान शब्द का दूसरा गुण धर्म : धर्म ऐवो हतो हन्ति धर्मा रक्षिति रक्षित: - जो सत्यवादी मनुष्य ईश्वरीय गुण कर्म स्वभाव और वेदों की शिक्षा के आधार पर धर्ममानना और पदार्थ के गुण कर्मानुसार मानना व प्राणी मात्र के साथ अनुकूल व्यवहार करना तथा जीवन के अन्दर सत्य आचरण, सत्य पुरुषार्थ, सत्य प्रभु भक्ति व सृष्टि कर्मानुसार व्यवहार और सत्य-असत्य, धर्म अधर्म, पाप-पुण्य व कृत्य-अकृत्य को सत्य की कसौटी पर परख कर चलता है तथा जैसे परमात्मा द्वारा प्राणी मात्र के साथ करना सदैव सत्य मार्ग पर चलना। यह भगवान का दूसरा भग है जो केवल मनुष्य रूपी उत्तम पुरुष में ही घट सकते हैं।

ईश्वर : ईश्वर सारे संसार का रचयिता है तथा ईश्वर ने प्रत्येक पदार्थ जड़, व चैतन्य में गुण विशेष दिये हैं जो सूर्य, अग्नि, वायु, जल, अन्न, फल, वनस्पति और मानव की रचना आदि क्रियाओं का गुण धर्म एक जैसे रहते हैं इनके गुण धर्म में कभी परिवर्तन नहीं होता। अपितु अपरिवर्तन शील गुण है, यही ईश्वरीय धर्म कहलाता है। जो प्राणी मात्र के कल्याण के लिए है। इसलिए ईश्वर कहलाता है जो मनुष्य रूपी भगवान नहीं कर सकते हैं अपितु ईश्वरीय गुणों के सहारे जीते हैं।

भगवान का तीसरा भग यश है : यश और अपयश देहधारी मनुष्यों में ही घट सकते हैं संसार में जिस महापुरुष ने अपने सात्विक कर्मो द्वारा, वेदानुकूल और ईश्वरीय गुण कर्म धर्मानुसार जन कल्याण किये हों उसका यश चारों ओर फैलता है। यह मनुष्यों में ही घट सकता है। इसलिए भगवान रूपी मनुष्य का तीसरा भग है।

ईश्वर : ईश्वर निर्विकार है और सर्व शक्तिमान है, सर्वान्तर्यामी है, सृष्टि रचयिता है। मानव को कर्मानुसार फल प्रदान करता है। अत: ईश्वर यश और अपयश से ऊपर है। ईश्वर सदैव ऋत यश में रहता है।

भगवान का चौथा भग/श्री है : महापुरुष संसार में जन्म लेकर जितना-जितना, वेदानुकूल, सृष्टिक्रमानुसार सत्य धर्म, सत्य, कर्म, सत्य ईश्वराभक्ति और जनता को सन्मार्ग दिखाना, परोपकार आदि गुणों से उसे संस्कार में "श्री" प्राप्त होती है अर्थात् श्रेष्ठता प्राप्त होती है। यह गुण केवल मनुष्य पर ही घट सकते हैं जिस पर यह गुण आ जाते हैं उसे भगवान कहते हैं।

ईश्वर : ईश्वर निर्विकार है और शक्तिमान है और सर्वाधार है, सर्वगुण सम्पन्न है और सर्वोत्तम है। सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता है, कालातीत है और श्री और निन्दा के गुणों के ऊपर है। सदैव कल्याणकारी होने से सदैव ऋत "श्री" ही है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

भगवान का पांचवां गुण ज्ञान है : मानव जन्म होते ही अज्ञानी रहता है और विद्या अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त करता है और संसार में अपने विवेक से, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान प्राप्त करता है और अपने ऊंचे ज्ञान से संसार के प्राणियों का अज्ञान मिटाना है उसे भगवान कहते हैं।

ईश्वर : ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है जो सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और सदैव, भूत, भविष्य व वर्तमान से ऊपर रहता

...शेष पेज 7 पर

संस्कृतम्

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी (मातृभक्तिः देशभक्तिश्च)

अस्मिन् संसारे माता मातृभूमिश्च एवैते सर्वोत्तमे स्त:। बालकस्योपरि मातु: यादृशं नैसर्गिकं प्रेम भवति, न तादृशं क्वापि प्राप्तुं शक्यते। माता बालकस्य कृते सर्वस्वमपि त्यक्तुं शक्नोति। मातु: सर्वदैव एषेच्छा भवति यद् बालक: सदा सुखी समृद्धो गुणगणविभूषितश्च भवेत्। सा स्वीयं कष्टजातं नैव चिन्तयति, बालकस्य सुखचिन्तैव सदा तस्या: समक्षं भवति। अतएव पुत्रस्यापि मातुरुपरि नैसर्गिकमसाधारणं च प्रेम भवति। स बाल्यकालात् प्रभृति मातरमेव सर्वतोऽधिकं मन्यते। बालकस्य कृते मातैव सर्वस्वमस्ति। मनुष्य: कदाचिदपि मातुरनृणतां प्राप्तुं न शक्नोति। अत एवोपनिषत्सु आदिश्यते- 'मातृदेवो भव'। अतएव मनुनाऽप्युक्तम्-

यं मातापितरौ क्लेशं, सहेते संभवे नृणाम्।

न तस्य निष्कृति: शक्या, कर्तु वर्षशतैरपि।।

अतएव मनुष्यै: मातृपूजा मातृभक्तिश्च सर्वदा करणीया।

यो मनुष्यो यत्र जन्म लभते, सा तस्य जन्मभूमि:। जन्मभूमि: मनुष्यस्य सर्वदैव आदरस्य पात्रं भवति। यत्र कुत्रापि गतो मनुष्यो जन्मभूमि सदा स्मरत्येव, तद्दर्शनस्याभिलाष: तस्य हृदये वर्तते। भारतवर्षमिदमस्माकं जन्मभूमि:। भारतवर्ष चास्माकं देश:। स्वदेशस्य कृते सर्वेषां हृदये संमान आदरश्च भवत:। अद्यत्वे संसारे सर्वे देशा: स्वदेशस्योन्नतिसाधने संलग्ना: सन्ति। ते साभिमानमेतद् वदन्ति यद् वयम् एतद्देशीया: स्म:। वयं भारतीया अपि साम्प्रतं स्वाधीना: स्म:। सर्वस्मिन् संसारे भारतवर्षस्य साम्प्रतमादरो भवति।

देशस्योन्नत्यै देशभक्तिभावनाया महत्यावश्यकता भवति। देशभक्तिभावनयैव मनुष्यो देशस्योन्नत्यै यतते, समाजस्योद्धारं करोति, अशिक्षितान् शिक्षितान् करोति, देशस्य दरिद्रतां हीनावस्थां च दूरीकरोति, स्वदेशीयव्यापारस्योन्नति करोति, स्वदेशनिर्मितानि वस्तूनि उपयुङक्ते, आवश्यकतायां सत्यां स्वकीयान् प्राणानपि मातृभूमिरक्षार्थं परित्यजति। यदा सर्वेष्वपि देशवासिषु एतादृशी भावना भवति, तदा देशो नूनमुन्नतिं प्राप्नोति। भारतीयेषु स्वदेशाभिमान: सर्वदा आसीत्, अस्ति च। अस्माभिरपि देशभक्तै: भाव्यम्, देशस्य चोन्नति: करणीया। लक्ष्यं च स्यात्-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मन:।

स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

दिल्ली में प्रदूषण और डेंगू जैसी भयानक बीमारी को खत्म करने के लिए विभिन्न जगहों पर यज्ञ हुए

कार्यक्रम बढ़ा दिया है। अर्थात् अभी यह कार्यक्रम 30 सितम्बर को सम्पन्न होना था लेकिन अब यह कार्यक्रम 6 अक्टूबर तक निरंतर चलता रहेगा। दिल्ली की जिन आर्य समाजों ने अभी तक इस कार्यक्रम में भाग नहीं लिया है। वे भी समाज के इस पुनीत कार्य में अपनी आहूति अवश्य डालें जिससे दिल्ली को प्रदूषण व डेंगू जैसे भयानक रोगों से मुक्त किया जा सके। महाशय धर्मपाल जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर किए गए यज्ञ-हवनों की झलकियां-

भगत सिंह चौक यमुना विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

नारायणा विहार, जी ब्लॉक श्रद्धानन्द वाटिका यज्ञ आयोजित।

इन्द्रपुरी सी ब्लॉक पार्क में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

पहाड़ी धर्मशाला के. ब्लॉक भजनपुरा में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

राजकीय बाल सी.से. स्कूल, शादीपुर में रोग निवारण यज्ञ आयोजित

ग्राम चौपाल नत्थुपुरा में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

त्रिनगर महर्षि दयानन्द पार्क व वर्धमान वाटिका त्रिनगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

हनुमान रोड दयानन्द वाटिका में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

कालका जी डबल स्टोरी ए ब्लॉक में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

गांव शादी खामपुर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

वीर सावरकर पार्क वैस्ट पंजाबी बाग में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

आर्य समाज पार्क न्यू मोती नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

दयानन्द ब्लॉक, शक्करपुर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

लाली बाई बाल विद्यालय गोबिन्द भवन, दयानन्द वाटिका में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

रोहताश नगर शाहदरा में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

सैंट्रल पार्क निर्माण विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

कीर्ति नगर खेल परिसर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

शहीद धिंगड़ा पार्क, पूर्वी पंजाबी बाग में रोग निवारण यज्ञ आयोजित

कीर्ति नगर, एफ ब्लॉक डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

बिड़ला लाईन्स रोशआरा बाग में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

सरोजनी नगर पार्क में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

The Physical & Spiritual Dawn

Men welcome the physical dawn radiant in the proximity of the sun like a youthful lady who animates all beings in activity. She gives light that dispels all the obstructing dark forces. In the form of the eye of all Nature's bounties, she becomes the source of creativity. She beams forth with golden colours and lovely radiance. She illuminates the earth with her most resplendent beams and bestows treasures on them. Men, therefore, adore the dawn as she possesses affluence, consisting of life and vigour.

To a devotee, there is a spiritual dawn that proceeds with the light of inner conscience. She appears with the radiance dispersing the dark gloom of human mind. To such an observant person of truth, she appears as a bright light emerging from the darkness of ignorant life. The burden of sinful thoughts thus vanishes from mind. The devotee beholds the uprising divine light beyond the mundane darkness and gradually he approaches the spiritual one, the most divine of the divinities when he exclaims:

"Now I see the paths innocuous and glorious, leading to divine powers. The banner of the spiritual dawn is unfurled in my heart rising to high altitude."

प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः।

अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात्प्रतीच्यागादधि हर्मेभ्यः।। (Rv. VII. 76.2)

Pra me pantha devayana adrsranm amardhanto vasubhir iskrtasah abhudu ketur usasah purastat praticy agad adhi harmebhyah..

Tributes to the Nourishing Plants

"Rejoice Plants with great joy, bearing abundant flowers and fruits, conquering over diseases. May you be victorious like quick horses, sproutin forth, noutishing men, safe beyond illness and disorder of body and mind."

"To all these plants in four groups I praise here, for their inherent virtues: 'Aswavti' (the curatives), 'Somavati' (the sedatives), 'Urjavati' (the energiging) and 'Ud-Ojasa' (the rejuvenating). May they wipe out all our diseases.

The plants descending form heaven say, " no evil shall befall man whom we nourish while he lives."

ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

आश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। (Rv.x.97.3)

अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम्।

अवित्सि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये।। (Rv.x.97.7)

अवपतन्तीरवदन्दिव ओषधयस्परि।

यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः।। (Rv.x.97.17)

Osadhih prati moddhvam puspa vatih prasuvarih.

asva iva sajitvarir virudhah parayisnavah.

Asvavatim somavatim urjayantim udojasam.

avitsi sarva osadhir asma aristatataye.

avapatantir avadan diva osadhayas pari.

yam jivam asnavamahai na sa risyati purusah.

Hymn to sun

"Radiant with benevolent virtues and mounting in to the highest eternal values, O Sun, remove the sickness of my heart and paleness of my body."

Sun is great in fame, mighty among divine fordces. He displays his form spreading light and life-energy in all corners. Destroying the wicked darkness, he rouses all the living beings from slumber. Elsewhere in the hymn, a verse compares Sun to divine falcon most predominant over other birds that flies swift as mind, bringing celestial elixir to mankind. with twelve-spoked wheels, he moves round in the heavens.

The rising Sun causes disappearance of ailments of head that rock its crown. He kills the seen and the unseen worms for our protection. Sore-sickness and yellowness of the ailing ones disappear when exposed to sunshine.

O Sun, In you is enshrined the supreme splendour of resplendent God. You always cherish beauty and piety. cleaning away the darkness on earth, your glorious fame spreads afar. You alone compose the earth and its forms according to the eternal law. May we proclaim your glory in all ceremonial celebrations.

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्।

हृद्रोंग मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।। (Rv. I.50.11)

Udyann adya mitramaha arohann uttaram divam.

hrdrogam mama surya harimanam ca nasaya.

To Be Continued...

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का दो दिवसीय अधिकारी प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक नई पहल प्रारम्भ की थी जिसके द्वारा प्रदेश की आर्य समाजों के अधिकारियों हेतु सैद्धान्तिक व सांगठनिक प्रशिक्षण वर्ग प्रारम्भ किया था। उसी क्रम में इस बाद आर्य समाज बी,एच.ई.एल. (भेल) हरिद्वार में 12 व 13 सितम्बर को प्रातः कालीन यज्ञ के साथ दो दिवसीय वर्ग का शुभारम्भ हुआ। प्रान्तीय प्रधान श्री देवराज आर्य की अध्यक्षता व छाया प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार के कुशल संचालन में प्रथम बौद्धिक सत्र प्रारम्भ हुआ। प्रथम सत्र के मुख्य बक्ता व मुख्य अतिथि श्री विनय आर्य (उप मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) रहे।

श्री विनय आर्य जी ने सभी आर्य समाजों के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''आर्य समाज के वर्तमान संगठन की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 में की यह बात सत्य है परन्तु यह भी सत्य है कि परमपिता परमात्मा द्वारा वेद ज्ञान तो सृष्टि के आदि से ही है जो सम्पूर्ण विश्व को आर्यो की भूमि कहता है, आर्य बनने की प्रेरणा देता है। वेद में कहा है-'अहं भूमिमददाम आर्याम' इसलिए आर्यो का समाज (आर्य समाज) सृष्टि के आदि काल से ही अस्तित्व में हे।'' श्री विनय आर्य ने अपने सम्बोधन में कतिपय बिन्दुओं को लेकर 3 घण्टे तक धाराप्रवाह बौद्धिक सत्र लिया जिसके मध्य प्रश्नोत्तर भी होते रहे-1. आर्य समाज को हम क्या मानते ह। एवं अन्य मतावलम्बी क्या मानते हैं। 2. आर्य समाज का गौरव शाली इतिहास। 3. आर्य समाज की सांगठनिक समस्याएं एवं इनका निराकरण। 4. वर्तमान सन्दर्भ में आर्य समाज की प्रासंगिकता। 5. आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए हम क्या करें। उक्त बिन्दुओं पर अनेक उदाहरणों के माध्यम से विस्तृत प्रकाश डाला गया। इससे पूर्व सभा प्रधान श्री देवराज आर्य छाया प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, सभा मंत्री श्री आनन्द प्रकाश आर्य, सभा कोषाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज आर्य न्यास सभा के अध्यक्ष श्री डी.पी. यादव व भेल आर्य समाज के प्रधान श्री शिव कुमार कपूर आदि ने केसरिया पटके द्वारा श्री विनय आर्य का स्वागत किया।

द्वितीय सत्र का संचाल करते हुए डॉ. विनय विद्यालंकार ने वेद प्रचार द्वारा मानव निर्माण व संसार के उपकार करने को आर्य समाज का प्रमुख उद्देश्य बताया तथा सभा प्रधान श्री देवराज आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम-उपनियमों के आलोक में सभी आर्य समाज की इकाईयों के संचालन के निर्देश प्रदान कियेव डॉ. विनय विद्यालंकर ने आर्य समाज के प्रथम नियम की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल व आदि स्रोत परमात्मा को सिद्ध किया। द्वितीय दिवस का प्रारम्भ भी सन्ध्या व यज्ञ के साथ हुआ। तदनन्तर डॉ. त्रिलोक चन्द्र जी का प्रवचन हुआ जिसका विषय 'अखण्ड मण्डन एवं धर्म' था। सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री ज्ञानचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री प्राणनाथ खुल्लर, श्रद्धानन्द बाल कविता आश्रम देहरादून के प्रबन्धक श्री ओम प्रकाश नागिया, पूर्व विधायक श्री रंजीत वर्मा, जिला सभा देहरादून के अध्यक्ष श्री दयानन्द तिवारी, जिला सभा हरिद्वार के अध्यक्ष डॉ. श्याम सिंह, चौ. ब्रह्म सिंह, प्रो ब्रह्मम देव विद्यालंकार भेल समाज के मंत्री व प्रशिक्षण वर्ग के संयोजक श्री प्रवीण आर्य जी आदि ने भाग लेते हुए अपनी शंकाएं प्रस्तुत की। शंका समाधान डॉ. विनय विद्यालंकर द्वारा किया गया। इसी सत्र में न्यास सभा के प्रमुख श्री डी.पी. यादव एडवोकेट द्वारा समाजों में विवा न हो इस विषय में अपने विचार प्रकट किये।

सत्र के अन्त में सभा प्रधान श्री देवराज आर्य द्वारा सभीप्रतिभागियों, वक्ताओं, सत्र संचालक व आयोजक आर्य समाज के पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। अधिकतर प्रतिभागियों ने ऐसे सत्र पुनः आयोजित करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में हरिद्वार व देहरादून के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

-डॉ. विनय विद्यालंकार

पृष्ठ 1 का शेष — बदलते जमाने के ...

का व्यवसाय पुजारियों ने कर डाला और आज साई के जागरण पूरे धूम-धाम से देश के कोने-कोने में हो रहे हैं फिलहाल बाकी के भगवान मृत हैं क्योंकि सांई अभी जिन्दा हैं।

अच्छा कुछ लोग कहते हैं कि नास्तिक लोग भगवान को मारते हैं, तो गलत, नास्तिक की क्या हैसियत है कि वो भगवान को मारे आपने कभी देखा, सुना है कि अंधेरे ने आकर दीये को बुझा दिया हो! इसलिये इस बात को गांठ में बांध लेना, भूलना मत कभी भी दुनिया में धर्म को खतरा नास्तिकों से इतना नहीं होता जितना झूठे आस्तिकों, पाखंडियों नये-नये भगवान के निर्माताओं से होता है। क्योंकि असली सिक्कों को खतरा कंकर, पत्थर से नहीं होता बल्कि नकली सिक्कों से होता है। मन्दिरों के पंडितों ने मस्जिदों के मौलवियों ने, चर्च के पादरियों ने, कभी मानवता को धर्म समझने नहीं दिया; कारण ये लोग नकली सिक्के हैं और इन्होंने निराकार ईश्वर को हटाकर, वैदिक रीति-नीति हटाकर असली सिक्कों को बाहर कर दिया। नकली सिक्के सस्ते भी मिलते हैं, तभी लोगों ने उन्हें हाथों-हाथ लिया क्योंकि असली धर्म के लिये उपासना रूपी श्रम करना पड़ता है, खुद को जानना पड़ता है। निराकार ईश्वर की सत्ता का रहस्य जानना पड़ता है।

पर इन लोगों के लिये मजे की बात यह रही कि जागरण में धन के साथ हुडदंग है, अंग्रेजी डांस है, अश्लीलता है, अभी कुछ दिन पहले एक सज्जन बता रहे कि हमारी कॉलोनी में सांई जागरण था सुबह देखा तो 20-25 शराब की खाली बोतल भीं मिलीं अब मेरा प्रश्न है, क्या यह भक्ति है? शराब भक्तों ने पी या इनके भगवान ने?

गौतम बुद्ध ने कभी नहीं कहा कि मुझे भगवान मानो, पर लोगों ने उन्हें भगवान बना दिया, महावीर ने नहीं कहा? मुझे भगवान कहो, लेकिन लोगों ने उसे भी भगवान बना दिया मर्यादा पुरषोत्तम राम के विचारों की हत्या इन पांखडियों ने की, योगिराज कृष्ण के विचारों के हत्यारे यही लोग हैं जो आज सांई के जागरण में माता के जागरण में नाच रहे हैं जो ऑनलाईन प्रसाद ले-दे रहे हैं। भगवान को पाने के लिये, धर्म को जिन्दा रखने के लिये, धर्म के अनुभव से गुजरना पड़ता है वरना धर्म तब भी था जब सोमनाथ के मन्दिर में यह पाखंडी शिव को अकेला छोड़ कर भाग गये थे और महमूद गजनवी की गदा के एक ही वार से मूर्ती चूर-चूर हो गयी थी आज फिर इन लोगों ने धर्म का वही धंधा बना दिया वही पाखंड, उसी भगवान व धर्म की रोज हत्या हो रही है अब आपको पुनः फिर धर्म को जीवित करना है बस बहुत हो गयी मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा अब सदियों से निष्प्राण पड़े धर्म में प्राण प्रतिष्ठा करनी है अब आपको इन लोगों के आडम्बर को समझना होगा जिस दिन आप लोग इनके व्यवसाय को समझ जायेंगे उस दिन मात्र आपके स्पर्श से धर्म जिन्दा हो जायेगा अन्त में फिर वही प्रश्न विचारणीय है कि भगवान को जिन्दा कौन रखता है क्योंकि अगर हम जिन्दा रखने वाले को पहचान लें, तो मारने वाले को भी पहचान जायेंगे।

-राजीव चौधरी

पृष्ठ 3 का शेष — भगवान और ईश्वर ...

है जो सर्वान्तर्यामी है उसे ईश्वर कहते हैं, जो मनुष्य रूपी भगवान में नहीं घट सकते हैं।

भगवान का छठा गुण वैराग्य है : मनुष्य रूपी महापुरुष संसार में जन्म तो लेते है। किन्तु कर्म मुक्त अर्थात् कर्म बन्धन मोह माया में नहीं फंसते। सदैव त्याग और परोपकार की भावना से कार्य करते हैं। संसार के विषयों से उपराम रहते हैं। जीवन और मृत्यु के रहस्य को समाप्त कर रोग मुक्त रहते हैं। इसलिए संसार उन्हें भगवान कहते हैं।

ईश्वर : ईश्वर निर्विकार और अनादि है तथा विकार रहित है सूक्ष्म से सूक्ष्म है। राग और बैराग्य से रहित है। प्राणी मात्र की आत्मा में संसार चक्र चलाने के लिए राग व बैराग्य उत्पन्न करने वाला है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

ध्यानाकर्षण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहीं भी एक शब्द भगवान नहीं लिखा है अपितु ईश्वर व परमात्मा तो जगह-जगह है तथा सम्पूर्ण आर्ष ग्रन्थों में भी ईश्वर व परमात्मा शब्द ही लिखा है।

आर्य उपदेशकों से निवेदन

प्रायः जनसाधारण में प्रचलित ईश्वर के लिए भगवान शब्द का प्रयोग आर्य उपदेशक भी करते रहते हैं। जबकि सम्पूर्ण वेदों में और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों में कहीं पर भी ईश्वर के लिए भगवान नहीं लिखा है। अतः हमें बड़ी सावधानी से उपदेश करते समय ईश्वर या परमात्मा शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए करना चाहिए और महापुरुषों के लिए भगवान शब्द का प्रयोग करना उचित है। इसलिए संसार राम, कृष्ण, हनुमान या अन्य देवताओं की तो जय बोलता है किन्तु ईश्वर की जय कोई भी नहीं कहता है क्योंकि ईश्वर जय-विजय से ऊपर है और सदैव ऋत सत्य है।

-पं. उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

आर्य समाज मन्दिर देव नगर 55वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर देव नगर अपना 55वां वार्षिकोत्सव दिनांक 8 से 11 अक्टूबर 2015 तक चतुर्वेद शतकीय यज्ञ एवं महिला सम्मेलन के साथ आयोजित कर रहा है।

-रमेश बेदी, मंत्री

आर्य समाज-वेद मंदिर, पीतमपुरा वार्षिक उत्सव

आर्य समाज-वेद मंदिर, पीतमपुरा, दिल्ली ने दिनांक 30 सितम्बर से 4 अक्टूबर तक अपना वार्षिकोत्सव आयोजित किया है। जिसमें डॉ. धमेन्द्र कुमार पूर्व सचिव, संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, डॉ. छवि कृष्ण शास्त्री यज्ञ ब्रह्मा एवं श्री अंकित उपाध्याय भजन प्रस्तुत करेंगे। **-सोहन लाल आर्य, मंत्री**

आर्य समाज दयानन्द विहार का

30 वां वार्षिक उत्सव एवं 51000 गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज दयानन्द विहार अपना 30 वां वार्षिक उत्सव एवं 51000 गायत्री महायज्ञ दिनांक 30 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2015 के मध्य आयोजित कर रहा है। प्रतिदिन गायत्री महायज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। दिनांक 3 व 4 अक्टूबर को आर्य बाल सम्मेलन और विचार गोष्ठी आयोजित की जायेगी।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्त्वावधान में

18वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्त्वावधान में 18वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक 31 अक्टूबर एवं 1,2 नवम्बर 2015 को आयोजित किया जा रहा है। आवास व्यवस्था सशुल्क होगी, सम्पर्क करें-

निवेदक :
भवानीदास आर्य, मंत्री, मो. 09829063110

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में

वैदिक ज्ञान व प्रतियोगिताएं

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल बी-ब्लॉक, जनकपुरी के तत्त्वावधान में दिनांक 23 व 24 अक्टूबर 2015 को ड्राइंग, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं एवं वैदिक ज्ञान का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उपरोक्त प्रतियोगिताएं केवल दिल्ली प्रदेश के लिए ही हैं। बच्चों के साथ अभिभावकों का आना अनिवार्य है।

निवेदक :
साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका

आर्ष गुरुकुल के स्नातकों के लिए आर्य समाज दयानन्द विहार, दिल्ली की ओर से

निःशुल्क निवास व्यवस्था

आर्ष गुरुकुल के स्नातक की परीक्षा पास कर दिल्ली में एम.ए. (संस्कृत) के छात्रों के लिए आर्य समाज दयानन्द विहार दिल्ली में निवास की निःशुल्क व्यवस्था है। खाद्यान्न अभाव की अवस्था में भोजन की व्यवस्था भी की जा सकती है। इच्छुक विद्यार्थी अपने प्रमाण पत्रों, पहचान पत्र सहित प्रधान आर्य समाज दयानन्द विहार दिल्ली-92 के नाम आवेदन करें।

-ईश नारंग, मंत्री
मो. 09911160975

वैदिक धर्म प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज ब्यावर के तत्त्वावधान में नगर आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर में दिनांक 4 से 6 सितम्बर को भजन व प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया व जन्माष्टमी पर श्री बुद्धि प्रकाश मंत्री आर्य समाज के निवास के सामने भगत की काठी रेलवे स्टेशन के निकट पार्क में वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में श्री रामेश्वर जसमतिया ने श्री कृष्ण के स्वरूप का बखान किया। पीपाड़ शहर में रामरख पुरोहित के सुपुत्रों ने अपने पिता की पुण्य तिथि पर चार दिन का यज्ञ-प्रवचन का कार्यक्रम पं. अमर सिंहजी वाचस्पति के सान्धिय में आयोजित किया। **-वैभव तोपनीवाल, मंत्री**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

28 सितम्बर से 04 अक्टूबर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 01 अक्टूबर/ 02 अक्टूबर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 सितम्बर, 2015

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

की प्रेरणा से

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली

के सौजन्य से

एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण व अभ्यास कार्यशाला

"घर घर यज्ञ - हर घर यज्ञ"

शुभारम्भ सत्र सायं 5.30 से 7.00 बजे शनिवार, 10 अक्टूबर 2015

समापन सायं 5.00 से 6.30 बजे रविवार, 18 अक्टूबर, 2015

प्रशिक्षण सत्र प्रातः 6.30 से 8.00 बजे व 5.30 से 7.00 बजे

(सभी प्रशिक्षणार्थी समय से 15 मिनट पहले अवश्य पहुंचे।)

स्थान : आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली-110015

प्रतिष्ठा में,

शुभारम्भ ब्रह्मा

आचार्य एम. आर. राजेश जी

(कालिकट, केरल)

सहयोग : आ. विवेक

आ. अरुण, आ. साजिथ

डॉ. ऋषिपाल शास्त्री

सभी याज्ञिक सदस्य एक समान गणवेश धारण करके स्वयं के यज्ञ कुण्ड पर अभ्यास करेगें

पुरुष : धोती व शाल महिलायें: साड़ी

केवल 50 सदस्य मान्य (प्रातःकालीन व सायंकालीन सत्र में) तथा प्रत्येक आर्यसमाज से अधिकतम 5 सदस्य

पंजीकरण एवं प्रशिक्षण शुल्क : 1000/- (घी, सामग्री, दीपक समिधा व गणवेश आदि व्यय)

संयोजक : सतीश चड्डा - 09540041414

सह संयोजक : राजेन्द्रपाल आर्य, राधेश नांगिया, श्री चन्द अग्रवाल, सतीश जुनेजा, कविता आर्या

निवेदक

धर्मपाल आर्य प्रधान

विनय आर्य महामंत्री

विद्यामित्र ठुकराल कोषाध्यक्ष

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित उदयपुर पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक साहित्य स्टाल

गत दिवस देहरादून पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक साहित्य स्टाल में मिली अपार सफलता के बाद दिनांक 3 से 11 अक्टूबर 2015 जनार्दन राय नगर राजस्थान विद्यापीठ यूनिवर्सिटी प्रताप नगर कैम्पस, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर(राजस्थान) में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार हेतु अपना वैदिक साहित्य बुक स्टाल लगा रही है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपना यह बुक स्टाल नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक मेले के अन्तर्गत लगा रही है। इस स्टाल में वेद-दर्शन, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि जीवन निर्माण में मार्ग दर्शक साहित्य उपलब्ध होगा। -रवि प्रकाश

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव

कार्यक्रम-विवरणम्

1. ब्रह्मसत्र-महायागः	03.00-04.00
2. प्रणव-ध्वजोत्तोलनम्	04.00-04.30
3. देव-वेदि-समारोहणम्	04.30-05.00
4. स्वागत-वन्दनाभिनन्दनम्	05.00-05.30
5. संस्कृत-कुल-प्रस्तुतिः	05 30-06.30
6. धन्यवाद-कृतज्ञता-ज्ञापनम्	06.30-07.00
7. शान्ति-मन्त्र-माचनम्	
8. ऋषि-अन्नादनम्	07.00

वर चाहिए

गर्ग परिवार की सुन्दर, स्वस्थ, संस्कारी डॉक्टर कन्या। लम्बाई 5'4'', एम.बी.बी.एस., एम.डी. जन्म तिथि 26 अक्टूबर 1984 हेतु। सुन्दर, स्वस्थ सी.ए., इंजीनियर शाकाहारी वर चाहिए।

सम्पर्क करें- मो. 09891659330

मन की आवाज - पूर्ण विश्वास के साथ

आबादी बढ़ने के साथ-साथ प्रदूषण और बीमारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं !

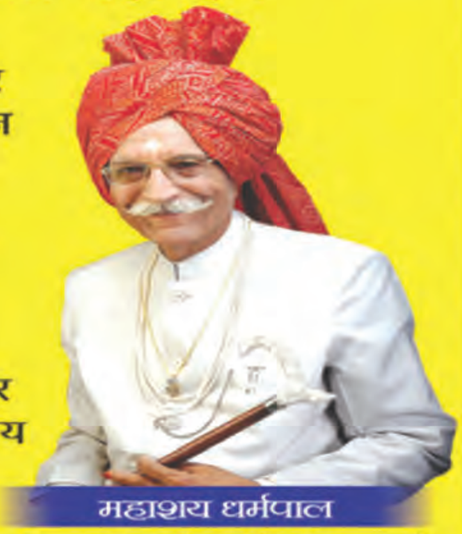

इन हालात को देखकर दुखी हुए महाशय धर्मपाल जी ने सोच-विचार किया और यह उनके मन की आवाज है जो उन्होंने पूरे विश्वास के साथ कही है :-

यज्ञ करो — प्रदूषण से बचो

दिल्ली की हर कॉलोनी में, हर मोहल्ले में, हर विद्यालय में डेंगू और बीमारियों के कीटाणुओं को दूर भगाने के लिए शुद्ध घी और औषधीय गुणों से युक्त हवन सामग्री से यज्ञ करें।

यज्ञ कराओ—डेंगू आदि रोगों के कीटाणुओं को भगाओ

शुद्ध, पवित्र एवं प्राकृतिक औषधीय (गिलोय आदि) जड़ी-बूटियों से निर्मित हवन सामग्री में रोगों से लड़ने की अद्भुत क्षमता है।

नोट :- आर्य समाज और एम.डी.एच. के संयुक्त तत्वावधान में, दिल्ली में 500 स्थानों पर प्रदूषण मुक्ति यज्ञों का आयोजन होगा। आप सब भी अवश्य भाग लें।

यज्ञ के प्रति जनता का उत्साह देखते हुए महाशय जी ने रोग मुक्ति यज्ञ कराने हेतु सामग्री एवं घृत प्राप्त करने की तिथि 6 अक्टूबर 2015 तक बढ़ा दी है

सौजन्य :-

MDH

असली मसाले सच - सच

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादकः धर्मपाल आर्य सह सम्पादकः विनय आर्य व्यवस्थापकः शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह